ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

मानव जीवन की उपादेयता में शंखनाद का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व

धर्मबीर यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग
इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी हरियाणा

शोध सारांश–

भारतीय सनातन संस्कृति की परम्परा में सदियों से ही शंख का विशेष महत्व रहा हैं। हिन्दू धर्म में सभी धार्मिक एवं मांगलिक कार्यो के अवसर पर शंख बजाना अत्यन्त पवित्र, शुभ व फलदायी माना जाता हैं। पूजा–पाठ व धार्मिक अनुष्ठान के साथ–साथ शंख का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी विशेष महत्व हैं। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शंखनाद करने से उसमें सफलता अवश्य ही मिलती हैं। महाभारत के युद्ध का प्रारम्भ भी भगवान श्रीकृष्ण के शंखनाद से ही हुआ था। सभी देवताओं के मन्दिरों में शंख अवश्य मिलता हैं, जिसका शंखनाद सुबह और सांय किया जाता हैं। गरूड़ पुराण में बताया गया है कि किसी भी मन्दिर के पट खोलते समय शंखनाद अवश्य करना चाहिए। शंखनाद के बाद ही पूजा–पाठ करनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखे तो पता चलता है कि शंख की ध्वनि जहाँ तक भी पहुँच पाती हैं, वहाँ तक अनेक बीमारियों से सम्बधिंत वायरस आदि नष्ट हो जाते हैं। प्रसिद्ध वैद्य आचार्य बृहस्पति देव त्रिगुणा ने अपने कई वर्षो के अनुभव एवं अनुसंधान में बताया है कि जो व्यक्ति नियमित शंखनाद करता हैं उसके फेफड़े बहुत मजबूत हो जाते है तथा श्वास संबंधी सभी रोग समाप्त हो जाते हैं।

शंख की उत्पति–

समुद्र मंथन के समय चौदह रत्नों की उत्पति हुई थी। उन चौदह रत्नों में छठवाँ रत्न शंख को माना जाता हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शंख को लक्ष्मी जी का भाई भी माना जाता हैं। जहाँ शंख हेाता है वहाँ लक्ष्मी जी का भी वास होता है।[1] वैसे शंख समुद्र के एक जीव के द्वारा बनाया हुआ एक ढांचा हैं। शंख बिना रीढ की हड्डी वाले समुद्री जीवों के शरीर के सख्त व मजबूत खोल हैं। इन जीवों को मॉलस्क कहते हैं। इनकी 60,000 से भी अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। सभी छोटे–बड़े शंख मॉलस्क जीव के शरीर के ही खोले जाते हैं। सीपी, कौड़ी आदि भी मॉलस्क जीव के ही खोले हैं।[2] शंख को पाञ्चजन्य, अर्णवभव, सुरचर, स्त्रीविभूषण, सुरचर, दीर्धनाद, बहुनाद, हरिप्रिय, जलोद्भव, समुद्राज, सुनाद, कंबु, पावनध्वनि, कंबोज, त्रिरेख, अर्णोभव, महानाद आदि नामों से भी जाना जाता हैं। सभी धर्म ग्रन्थों के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि शंख की उत्पति आत्मतत्व व आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि तत्वों से ही मिलकर हुई हैं।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

शास्त्रों में श्रेष्ठ शंख के लक्ष्णों के विषय में भी बताया गया हैं। निर्मल व चन्द्रमा की कान्ति के समरूप गुण रखने वाला शंख श्रेष्ठ होता हैं। जबकि अशुद्ध अर्थात् मग्न शंख गुणदायक नहीं होते हैं।[3]

शंख के प्रकार–

शंख आकार और बनावट के आधार पर अनेक प्रकार के होते हैं। सभी शंखो के अलग–अलग गुण व विशेषताएं होती हैं। वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा शंख केरल राज्य के गुरूवयुर नामक स्थान के श्रीकृष्ण मन्दिर में रखा हुआ हैं। जिसकी लम्बाई आधा मीटर व वनज दो किलोग्राम हैं। प्राकृतिक रूप से शंख कई प्रकार के होते हैं, परन्तु शास्त्रों के आधार पर मुख्य रूप सें शंख के तीन प्रकार बताए गए है परन्तु मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं– वामावर्ती, दक्षिणावर्ती तथा मध्यवर्ती या गणेश शंख।[4]

1. **दक्षिणावर्ती शंख–** जिस शंख का पेट दाई और खुलता है उसे ही दक्षिणावर्ती शंख कहते हैं। इस शंख को देवताओं के समरूप माना जाता हैं। इस शंख के पूजन से जीवन में खुशहाली आती हैं। इसलिए इस शंख को बजाया नहीं जाता बल्कि पूजा के स्थान पर रखा जाता हैं। इसमें रखा हुआ जल पीने से पेट व आँखों के रोगों से जल्द ही छुटकारा मिल जाता हैं। दक्षिणावर्ती शंख के दो प्रकार होते हैं एक नर व दूसरा मादा। जो शंख भारी हो और परत मोटी हो वह नर शंख होता हैं। जिसकी परत पतली और वजन में हल्का हो वह मादा शंख होता हैं।
2. **वामवर्ती शंख–** जिस शंख का पेट बाई और खुला होता हैं वह वामवर्ती शंख कहलाता हैं। ये शंख संख्या में अधिक पाए जाते हैं। इसका आकार यंत्र की तरह होता हैं इसलिए इसे प्राकृतिक श्री यंत्र भी माना जाता हैं। इस शंख की आवाज बहुत सुरीली होती हैं। विद्या की देवी सरस्वती भी इसी शंख को धारण करती हैं। इस शंख की पूजा करने या इसमें रखा जल पीने से मंद बुद्धि इंसान भी ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता हैं।
3. **मध्यवर्ती या गणेश शंख–** जिस शंख की आकृति गणेश जी के चेहरे की तरह होती है उसे ही मध्यवर्ती या गणेश शंख कहते हैं। गणेश शंख मिलना बहुत दुर्लभ होता हैं। इस शंख के पूजन से जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्नति की प्राप्ति होती हैं तथा सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

उपर्युक्त तीन मुख्य प्रकार के शंखो के अतिरिक्त अन्य प्रकार के शंखो को भी हम विस्तार से जानेगें–

4. **गीता में शंख के प्रकार–** योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के पास पांचजन्य नामक शंख था। इस शंख की आकृति हाथ की पाँच अंगुलियों की तरह होती हैं। यह शंख विजय और यश का प्रतीक माना जाता हैं। महाभारत युद्ध के प्रारम्भ में श्रीकृष्ण ने अपना पाञ्चजन्य शंख बजाया, अर्जुन ने देवदत नामक शंख, रणकर्म कर्ता भीम ने पौण्ड नामक अलौकिक शंख बजाया।[5]

कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अपना अनन्त विजय नामक शंख बजाया, नकुल और सहदेव ने सुबोध एवं मनिपुष्पक नामक शंख बजाए।[6] गीता में बताया है कि इन सभी यौद्धाओं के एक साथ शंखनाद करने से पृथ्वी आकाश में खलबली मच गई और धृतराष्ट्र के पुत्रों के हदय को विचलित करने लगी।[7]

Copyright @ 2020 Authors

5. **विष्णु शंख–** इस शंख का आकार गरूड़ पक्षी की आकृति के समान होता हैं वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी इस शंख को भगवान विष्णु का स्वरूप मानकर इसकी पूजा अर्चना करते हैं। एक मान्यता के अनुसार इस शंख में रोहिणी, चित्रा व स्वाति नक्षत्रों में गंगाजल भरकर मंत्र जप करने के पश्चात गर्भवती महिला को पिलाने से स्वस्थ, सुन्दर व प्रखर बुद्धिवान संतान की उत्पति होती हैं।
6. **मोती शंख–** इसका आकार छोटा व एक मोती की तरह होता हें। इसकी पूजा करने से सुख, समृद्धि व शान्ति की प्राप्ति होती हैं।
7. **कोड़ी शंख–** इसका मिलना बहुत दुर्लभ होता हैं। प्राचीनकाल से ही इस शंख का प्रयोग गहने, मुद्रा और पासे बनाने के लिए किया जाता रहा हैं।
8. **हीरा शंख–** यह शंख पहाड़ों में पाए जाते हैं इसलिए इन्हे पहाड़ी शंख भी कहा जाता हैं, यह बहुत ही बहुमूल्यवान माना जाता हैं।
9. **अन्नपूर्णा शंख–** अन्नपूर्णा अर्थात् अन्न की पूर्ति करने वाला। इसके पूजन से सुख–शान्ति व समृद्धि की प्राप्ति होती हैं।
10. **ऐरावत शंख–** भगवान इन्द्र के हाथी का नाम ऐरावत हैं। उसी के समान इस शंख की आकृति होती हैं। इसलिए इसे ऐरावत शंख कहा जाता हैं। इसकी पूजा सिद्धि प्राप्ति के लिए की जाती हैं।
11. **टाइगर शंख–**जिस शंख पर बाघ की तरह धारियां होती हैं और जो बहुत ही सुन्दर दिखाई देता हैं उसे ही टाइगर शंख कहा जाता हैं।

इन सभी शंखों के अलावा देश–विदेश में अन्य प्रकार के शंख भी पाए जाते हैं, जैसे–देव शंख, चक्र शंख, राक्षस शंख पंचमुखी शंख, बुद्ध शंख, कच्छप शंख, सुदर्शन शंख, राहु शंख, केतु शंख, शेर शंख आदि।

शंख का आध्यात्मिक महत्व–

भारतीय वैदिक परम्परा में शंख का धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व हैं। आर्ष ग्रन्थों में भी शंख की महिता का गुणगान किया गया हैं। अर्थववेद में शंख को रक्षक, अज्ञान, दरिद्रता व गरीबी, राक्षसों और भूत–प्रेतों को दूर करने वाला कहा गया हैं।[8] यजुर्वेद में भी कहा गया है कि पूजा करते समय शंख नाद करने से सभी प्रकार के पापों व कष्टों से मुक्ति मिलती है तथा भगवान विष्णु के समान आनन्द की अनुभति होती हैं।[9]

शंख की ध्वनि को ओ३म् ध्वनि के समान ही गुणकारी माना गया हैं। शंख को नादब्रह्मा और दिव्य मत्रं की संज्ञा दी गई हैं। पुराणों के अनुसार शंख चन्द्रमा और सूर्य की तरह ही देवस्वरूप हैं।[10]

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा करोना जैसी वैश्विक महामारी से निपटने के लिए शंख, घंटा, ताली और थाली बजाने का जो आह्वान किया था वह एक आध्यात्मिक प्रयोग ही था। जिसके माध्यम से प्राणाकर्षण करके करोना महामारी से मुकाबला करने के लिए यौद्धाओं में आस्था, विश्वास, ऊर्जा, शक्ति का संचार करना था।

Copyright @ 2020 Authors

शंख का वैज्ञानिक महत्व–

आध्यात्मिक एंव धार्मिकता के साथ–साथ शंख का स्वास्थ्य एवं वैज्ञानिक दृष्टि से भी विशेष महत्व है। सन् 1928 ई. में जर्मनी की फ्री यूनिवर्सिटी ऑफ बर्लिन नें शंख की ध्वनि पर गहन अनुसंधान करके बताया की इसकी ध्वनि में सभी प्रकार के वायरस, कीटाणुओं आदि को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति हैं।

ब्ताते है कि प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक तानसेन ने प्रारम्भ में शंख बजाकर ही गायन शक्ति को अर्जित किया था। शंख में केल्शियम, फॉस्फोरस, जिंक आदि के अलावा अनेंकों प्रकार के मिनरल्स होते हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। इसलिए शंख में रखा हुआ पानी पीने से अनेक शरीरिक एवं मानसिक रोगों से छुटकारा मिलता हैं। शंख बजाने से सांसों में तालबद्धता आती हैं। शंख बजाने से सभी मुख्य प्राणायामों का लाभ स्वतः ही मिल जाता हैं। शंख बजाने से शरीर में ऊर्जा, जोश, उमंग, ताजगी का संचार होता हैं। इसके निरन्तर अभ्यास से सभी प्रकार के सांस रोगों से छुटकारा मिलता हैं।[11]

ऋषि श्रृग ने बताया कि छोटे बच्चों के शरीर पर छोटे–छोटे शंख बाँधने तथा शंख का पानी पिलाने से सभी प्रकार के वाणी दोष दूर हो जाते हैं। आयुर्वेद में शंखोदक भस्म का प्रयोग पीलिया, पथरी तथा पेट के अन्य रोग आदि में भी खूब प्रयोग होता हैं। शंखनाद करने से पर्यावरण शुद्ध होता है और नकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह कम होता हैं।[12] अतः शंख का जितना धर्मिक महत्व है उतना ही वैज्ञानिक महत्व भी हैं।

निष्कर्ष–

प्राचीन काल में शंख का जितना महत्व था उतना ही महत्व आज भी हैं। आध्यात्मिक एंव धार्मिक दृष्टि के साथ–साथ शंख का स्वास्थ्य व वैज्ञानिक दृष्टि से भी विशेष महत्व हैं। अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार छोटा–बड़ा, महिला–पुरूष, वृद्ध–जवान किसी भी उम्र का कोई भी व्यक्ति शंख बजा सकता हैं। योग एवं आयुर्वेद में भी शंख का विशेष महत्व हैं। योग में शरीर शुद्धि के लिए शंख प्रक्षालन की क्रिया बहुत प्रसिद्ध हैं। शंख मुद्रा भी योग में बहुत गुणकारी बताई गई है। आयुर्वेद में शरीर एवं मन की पुष्टि के लिए शंख पुष्पी व शंख भष्म का प्रयोग किया जाता हैं।

बताया जाता है कि प्राचीन काल में शंख नाम से एक लिपि भी हुआ करती थी। निसन्देह शंख विज्ञान की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरता हैं। इसलिए वर्तमान समय में सुख, शांति, समृद्धि, स्वास्थ्य, संस्कार एवं खुशहाली की प्राप्ति के लिए विश्व के प्रत्येक कोने में शंखनाद होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Hinduhaihum.com
2. Makingindiaonline.in

Copyright @ 2020 Authors

3. शंखस्तुविमलः श्रेष्ठश्चन्द्रकांति समप्रभः।
अशुद्वेगुणदौषैवशुद्वस्तु सुगुणप्रदः।।
4. द्विधासदक्षिणावर्तिर्वामावतिर्स्तुभेदतः
दक्षिणावर्त शंकरवस्तु पुण्ययोगादवाप्यते
यद्वहे तिष्ठाति सौवै लक्ष्म्याभाजनं भवेत्
5. पाञ्चजन्य हपीकेशों देवदतं धनञजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशंख भीमकर्ता वृकोदरः।। (गीता 1.15)
6. अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुधोषमणिपुष्पकौ।। (गीता 1.16)
7. स धोषो धार्तराष्ट्राणां हद्यानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।।(गीता 1.19)
8. शंखेन हत्वा रक्षासि
अथर्ववेद, कांड–चार, शंखमणि सुक्त
9. कि यस्तु शंख ध्वनिं कुर्यात पूजाकाले विशेषतः।
वियुक्तः सर्वपापेन विष्णुनां सह मोदते।। यजुर्वेद
10. मंत्र महाविज्ञान – ड़ॉ. अमृत लाल गुर्वेन्द्र
11. प्राणायाम– बी.के. एस. अयंगर
चरक सहिंता एंव सुश्रुत संहिता

Copyright @ 2020 Authors